हिन्दी

(A)Major Courses

SL .No	SEM	Type of Course	Name of Courses	Credits	MARKS
1.	I	MJC-1	हिंदी साहित्य का इतिहास : आदिकाल से रीतिकाल तक	6	100
2.	II	MJC-2	आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता	6	100
3.	III	MJC-3	हिंदी साहित्य का इतिहास : आधुनिक काल	5	100
4.	III	MJC-4	आधुनिक हिंदी कविता : छायावाद तक	4	100
5.	IV	MJC-5	छायावादोत्तर हिंदी कविता	5	100
6.	IV	MJC-6	भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र	5	100
7.	IV	MJC-7	हिंदी की साहित्यिक विधाएं : उद्भव और विकास	5	100
8.	V	MJC-8	हिंदी भाषा : उद्भव और विकास	5	100
9.	V	MJC-9	हिंदी उपन्यास : पाठ	5	100
10.	VI	MJC-10	हिंदी कहानी : पाठ	4	100
11.	VI	MJC-11	हिंदी नाटक एवं रंगमंच	5	100
12.	VI	MJC-12	हिंदी निबंध और अन्य गद्य विधाएँ	5	100
13.	VII	MJC-13	हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता	5	100
14.	VII	MJC-14	शोध प्रविधि (रिसर्च मेथॉडोलॉजी)	5	100
15.	VII	MJC-15	प्रयोजनमूलक हिंदी	6	100
16.	VIII	MJC-16	लोक साहित्य	4	100
			कुल	80	

(B) Minor Courses to be offered by the Department for the students of other departments of Humanities

SL .No	SEM	Type of Course	Name of Courses	Credits	MARKS
1.	I	MIC-1	हिंदी साहित्य का इतिहास	3	100
2.	II	MIC-2	हिंदी कविता : मध्यकाल तक	3	100
3.	III	MIC-3	आधुनिक हिंदी कविता : छायावाद तक	3	100
4.	IV	MIC-4	आधुनिक हिंदी कविता : छायावाद के बाद	3	100
5.	V	MIC-5	भारतीय काव्यशास्त्र	3	100
6.	V	MIC-6	हिंदी की साहित्यिक विधाएं : समीक्षात्मक अध्ययन	3	100
7.	VI	MIC-7	प्रयोजनमूलक हिंदी	3	100
8.	VI	MIC-8	हिंदी कहानियां : पाठ	3	100
9.	VII	MIC-9	हिंदी उपन्यास : पाठ	4	100
10.	VIII	MIC-10	हिंदी गद्य (विविध विधाएं) : पाठ	4	100
			कुल	32 -	

SEMESTER -1

MJC-1 : हिंदी साहित्य का इतिहास : आदिकाल से रीतिकाल तक

COURSE OBJECTIVES

हिन्दी साहित्य के हजार वर्षों से अधिक के इतिहास के प्रारम्भिक एवं संक्रमणकालीन दौर के निर्माण की गाथा से परिचित कराना इस पत्र का उद्देश्य है। भाषा-साहित्य के व्यापक परिवर्तनों से भरे इस दौर के अध्ययन से किसी भी भाषा-साहित्य के निर्माण की प्रक्रिया से भलीभांति अवगत हुआ जा सकता है।

हिन्दी भक्तिकाव्य भारत की सभी भाषाओं के साहित्य में व्याप्त अखिल भारतीय आंदोलन का हिस्सा था। इसके साहित्य के निर्माण में विभिन्न धर्मों, संप्रदायों एवं जातियों का अभूतपूर्व योगदान रहा है। भक्तिकाव्य भारत की सामासिक संस्कृति का सर्वोत्तम उदाहरण है। इसका परिचय इस पत्र के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

	MJC-1 : हिंदी साहित्य का इतिहास : आदिकाल से रीतिकाल तक (Theory: 6 Credits)		
Unit	**Topic to be covered**	**No. of Lectures**	**L-T-P 6-1-0 Per week**
1.	• हिंदी साहित्येतिहास दृष्टि : इतिहास और साहित्य का इतिहास ; काल विभाजन एवं नामकरण संबंधी समस्याएँ • आदिकालीन साहित्य: नामकरण और काल- निर्धारण • आदिकालीन साहित्य की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि	15	
2	• आदिकालीन काव्य के विभिन्न रूपों का समीक्षात्मक परिचय : सिद्ध-जैन काव्य, रासो काव्य, लौकिक काव्य एवं अन्य काव्य ; आदिकालीन काव्य की महत्वपूर्ण विशेषताएं एवं प्रवृत्तियां	15	
3	• भक्तिकालीन साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि • भक्तिकालीन काव्य के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार • हिन्दी भक्तिकालीन काव्य : अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य	12	
4	• भक्तिकालीन काव्य की प्रमुख धाराएं और प्रवृत्तियाँ : उनके आपसी संबंध और वैशिष्ट्य	12	
5	• रीतिकालीन काव्य : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, नामकरण एवं काल-निर्धारण • रीतिकालीन काव्य की प्रमुख धाराएँ और उसके महत्वपूर्ण कवि	09	

6.	• रीतिकालीन काव्य की भाषिक-साहित्यिक विशेषताएं और प्रवृत्तियाँ • आदिकालीन एवं मध्यकालीन साहित्य का समग्र मूल्यांकन	12	
	कुल योग	**75**	

COURSE OUTCOMES - इस पत्र के अध्ययन से हिन्दी साहित्य की प्रारम्भिक अवस्थाओं / स्थितियों का परिचय मिलेगा। भारतीय साहित्य की परम्पराओं से हिन्दी साहित्य को विरासत के रूप में साहित्य और संस्कृति की कौन-कौन सी प्रवृत्तियाँ प्राप्त हुई - इसका पता चलेगा। भक्ति आन्दोलन से जिस गंगा-जमुनी भारतीय संस्कृति का प्रचलन हुआ उसका ज्ञान विद्यार्थियों को व्यावहारिक रूप से साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से प्राप्त होगा।

सहायक पुस्तकें –

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिंदी साहित्य की भूमिका : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. हिंदी साहित्य का आदिकाल :आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
4. हिंदी साहित्य का इतिहास :लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. हिंदी साहित्य का इतिहास : संपादक डॉ नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
6. हिंदी साहित्य का इतिहास दर्शन : नलिनविलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
7. साहित्य की इतिहास दृष्टि : मैनेजर पांडेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. हिन्दी साहित्य संवेदना का विकास : रामस्वरुप चहतुर्वेदी

MJC-2 : आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता

COURSE OBJECTIVES

हिंदी कविता का बहुत बड़ा हिस्सा इस पत्र से सम्बद्ध है। आदिकालीन कविता हिंदी में कविता का निर्माण-काल है। इसकी एक धारा के प्रमुख कवि विद्यापति हैं, जिन्हें अंतरप्रांतीय लोकप्रियता हासिल है। भक्तिकाल को हिंदी साहित्य के इतिहास में स्वर्णकाल कहा जाता है। इस काल की विभिन्न धाराओं से जुड़े कबीर, जायसी, सूर, तुलसी जैसे महान कवि हुए हैं। इन कवियों के काव्य के अध्ययन-आस्वादन से पाठकों के काव्यविवेक को तो दिशा मिलेगी ही, अपने देश और समाज को समझने में भी भरपूर मदद मिलेगी। साथ ही रीतिकाल के बिहारी एवं घनानन्द जैसे श्रेष्ठ कवियों की कविता के अध्ययन से हिन्दी कविता के एक भिन्न किन्तु महत्वपूर्ण स्वरूप से परिचय होगा।

	MJC-2 : आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता **(Theory: 6 Credits)**		
Unit	**Topic to be covered**	**No. of Lectures**	**L-T-P 6-1-0**
1	• **विद्यापति** (विद्यापति पदावली, संपादक : रामवृक्ष बेनीपुरी) • देख देख राधा रूप अपार .....(2) • जय जय भैरवि .....(3) • सैसव जौवन दुहु मिली गेल ....(4) • कामिनी करए सनाने .....(23) • ए सखी पेखल एक अपरूप .....(36) • कुंज भवन सं निकसल रे ..... (59) • तातल सैकत बार–बिन्दु सम ..(254) • **कबीर** (कबीर ग्रंथावली, संपादक : बाबू श्याम सुंदर दास) • ऐसा भेद बिगुचन भारी .....(47) • अकथ कहानी प्रेम की ....(156) • लोका मति के भोरा रे....(402)	14	
2	➢ **मलिक मुहम्मद जायसी** (पद्मावत, संपादक : वासुदेवशरण अग्रवाल) • मानसरोदक खण्ड	14	

	• नागमती संदेश खण्ड ➢ **सूरदास** (श्रीकृष्ण बाल-माधुरी : गीता प्रेस, गोरखपुर) • कहन लागे मोहन मैया-मैया.....(88) • देखौ माई! कान्ह हिलकियानी रोवै...(229) • मैया! हौं गाइ चरावन जैहों .....(281)		
3	➢ **तुलसीदास** (कवितावली : काशी नागरी प्रचारिणी सभा) • अवधेश के द्वारे सकारे गए ... (बालकाण्ड) • पात भरी सहरी, सकल सुत बारे-बारे (अयोध्याकाण्ड, 8) • संकर-सहर सर, नरनारि बारिचर... (काशी में महामारी, 176 और 177) • रामचरितमानस (अयोध्याकांड), गीता प्रेस, गोरखपुर : दोहा सं. 252 से 269 और 303 से 308	16	
4	➢ **रहीम** (रहीम ग्रंथावली, खण्ड चार) • बरवै संख्या 10 से 30 तक ➢ **मीराँबाई** की पदावली : सं. परशुराम चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग पद सं. 3, 17, 19, 32, 36, 38, 46, 53, 70, 116	10	
5	➢ **बिहारी** (बिहारी रत्नाकर : संपादक - श्री जगन्नाथदास रत्नाकर) दोहा संख्या- 1, 8, 16, 20, 32, 35, 38, 51, 63, 67, 69, 70, 73, 78, 84, 94, 121, 141, 143, 182, 255, 299, 301, 420, 663	08	
6.	➢ **घनानंद** (घनानंद कबित्त, भूमिका : आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) • भये अति निठुर, मिटाय पहचानि डारी...(7) • हीन भएँ जल मीन अधीन .....(8) • मीत सुजान अनीत करौ जिन..... (9) • पहिलें घन-आनंद सींचि सुजान..... (10) • तब तौ छवि पीवत जीवत हे.....(13) • पहिले अपनाय सुजान सनेह सों.....(14) • रावरे रूप की रीति अनूप..... (15) • अति सूधो सनेह को मारग है.....(82)	13	

	➢ रसखान • मानुष हौं तो वही 'रसखानि' बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन... • कान्ह भये बस बाँसुरी के अब कौन सखि हमकों चहिहैं ..... • मेरौ सुभाय चितैबो कौ माई री लाल निहारी कै बंसी बजाई.....		
	कुल योग	75	

COURSE OUTCOMES

इस पत्र को पढ़ने के बाद हिंदी के आदिकाल से लेकर रीतिकाल के विशिष्ट कवियों के काव्य वैशिष्ट्य से परिचित हो सकेंगे। इन कवियों के अध्ययन से हिंदी कविता के वैविध्य से परिचित होने का आपको अवसर मिलेगा। तदयुगीन ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक यथार्थ से कविता के संबंध की व्याख्या कर सकेंगे। साथ ही कविताओं के पाठगत अध्ययन से आपकी संवेदना का विकास होगा और आपकी भाषा समृद्ध होगी।

सहायक पुस्तकें –

1. विद्यापति : शिव प्रसाद सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद
2. जायसी : विजय देवनारायण साही, हिन्दुस्तान एकेडमी, इलाहाबाद
3. सूफीमत: साधना और साहित्य : राम पूजन तिवारी, ज्ञानमंडल, वाराणसी
4. कबीर : हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. अकथ कहानी प्रेम की : पुरूषोत्तम अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. सूरदास : रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
7. तुलसीदास : रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
8. सूर साहित्य : हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. मीरा का काव्य : विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10. बिहारी : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
11. घनानन्द और स्वच्छन्द काव्यधारा: मनोहर लाल गौड़

MIC-1	हिंदी साहित्य का इतिहास

COURSE OBJECTIVES

हिन्दी साहित्य के हजार वर्षों से अधिक के इतिहास के भाषा-साहित्य के निर्माण की प्रक्रिया से भलीभांति अवगत हुआ जा सकता है। हिन्दी भक्तिकाव्य भारत की सभी भाषाओं के साहित्य में व्याप्त अखिल भारतीय आंदोलन का हिस्सा था। इसके साहित्य के निर्माण में विभिन्न धर्मों, संप्रदायों एवं जातियों का अभूतपूर्व योगदान रहा है। रीतिकाल हिन्दी का एक विशिष्ट काल है। भक्तिकाल से इसकी भिन्नता को आप समझ सकेंगे। आधुनिक काल कविता ही नहीं, गद्य के भी विकास का काल है। इस पत्र के माध्यम से आधुनिकता के विभिन्न स्वरूपों की पड़ताल के साथ साहित्य और समाज के संबंध के नवीन स्वरूप को पहचाना जा सकता है।

	MIC-1 (Theory: 03 Credits)		
Unit	**Topic to be covered**	**No. of Lectures**	**L-T-P 3-1-0 Per weak**
1.	• आदिकालीन साहित्य: नामकरण, काल-निर्धारण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएं • निर्गुण एवं सगुण भक्ति काव्य: धाराएँ एवं प्रवृत्तियाँ • रीतिकाल : नामकरण, काल-निर्धारण; रीतिबद्ध, रीतिमुक्त और रीतिसिद्ध काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएं	14	
2.	• अधुनिक काव्य : भारतेन्दु युग – नामकरण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि-लेखक एवं संपादक • द्विवेदी युग: नामकरण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि-लेखक एवं संपादक • छायावाद : नामकरण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि-लेखक	16	
3.	• प्रगतिवाद, उत्तर छायावाद, प्रयोगवाद, नई कविता, सठोत्तरी कविता : नामकरण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि-लेखक • हिन्दी गद्य और उसकी विभिन्न विधाओं का विकास	15	
	कुल	45	

COURSE OUTCOMES

जनता की चित्तवृत्ति के बदलते स्वरूप के साथ साहित्य के बदलते स्वरूप के संबंध को आप भलीभांति समझ सकेंगे। इस पत्र के माध्यम से विभिन्न युगों के काव्य/ साहित्य के आपसी संबंधों के साथ उनके बीच के अंतर्विरोधों को भी समझा जा सकता है। इस पत्र के माध्यम से समाज और साहित्य के संबंधों के स्वरूप की भी आप व्याख्या कर सकेंगे।

सहायक पुस्तकें –

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिंदी साहित्य की भूमिका : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. हिंदी साहित्य का आदिकाल :आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
4. हिंदी साहित्य का इतिहास :लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. हिंदी साहित्य का इतिहास : संपादक डॉ नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
6. हिंदी साहित्य का इतिहास दर्शन : नलिनविलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
7. साहित्य की इतिहास दृष्टि : मैनेजर पांडेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

MIC-2	हिंदी कविता : मध्यकाल

COURSE OBJECTIVES

हिंदी कविता का बहुत बड़ा हिस्सा इस पत्र से संबंधित है। आदिकालीन कविता हिंदी में कविता का निर्माण काल है। इसकी एक धारा के प्रमुख कवि विद्यापति हैं, जिन्हें अंतरप्रांतीय लोकप्रियता हासिल है। भक्तिकाल को हिंदी साहित्य के इतिहास में स्वर्णकाल कहा जाता है। इस काल की विभिन्न धाराओं से जुड़े कबीर, जायसी, सूर, तुलसी जैसे महान कवि हुए हैं। इन कवियों के काव्य के अध्ययन-आस्वादन से पाठकों के काव्यविवेक को तो दिशा मिलेगी ही, अपने देश और समाज को समझने में भी भरपूर मदद मिलेगी साथ ही रीतिकाल के बिहारी एवं घनानन्द जैसे श्रेष्ठ कवियों की कविता के अध्ययन से हिन्दी कविता के एक भिन्न किन्तु महत्वपूर्ण स्वरूप से परिचय होगा।

	MIC-2 (Theory: 03 Credits)		
Unit	**Topic to be covered**	**No. of Lectures**	**L-T-P 3-1-0 Per weak**
1.	• **विद्यापति** (विद्यापति पदावली संपादक, रामवृक्ष बेनीपुरी) • देख- देख राधा रूप अपार .....(2) • जय जय भैरवि असुर .....(3) • तातल सैकत बार -बिन्दु सम....(254) • **कबीर** (कबीर ग्रंथावली : संपादक बाबू श्याम सुंदर दास) • अकथ कहानी प्रेम की .....(156) • लोका मति के भोरा रे.....(402) ➢ **मलिक मुहम्मद जायसी** (पद्मावत: संपादक वासुदेवशरण अग्रवाल) • मानसरोदक खण्ड	**15**	
2.	➢ **सूरदास** (श्रीकृष्ण बाल-माधुरी, गीता प्रेस, गोरखपुर) • कहन लागे मोहन मैया-मैया.....(88) • मैया! हौं गाइ चरावन जैहों .....(281) ➢ **तुलसीदास :** रामचरित मानस(बाल कांड) गीता प्रेस गोरखपुर • धनुर्भंग प्रसंग (दोहा संख्या : 249 से 262 तक)	**15**	
3.	➢ **बिहारी** (बिहारी रत्नाकर : संपादक श्री जगन्नाथदास रत्नाकर)दोहा संख्या- 01,08,16,20,32,33,38,51,63,67	**15**	

	➢ **घनानंद** (घनानंद कबित्त, भूमिका : आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) • भये अति निठुर, मिटाय पहचानि डारी...(7) • तब तौ छवि पीवत जीवत हे.....(13) • रावरे रूप की रीति अनूप..... (15) • अति सूधो सनेह को मारग है.....(82)		
	कुल	**45**	

COURSE OUTCOMES

मध्यकाल की हिंदी कविता की विभिन्न छवियों से आप परिचित हो सकेंगे। इन कवियों के पाठगत अध्ययन से आप साहित्य के साथ सामाजिक संबंधों की पड़ताल भी कर सकेंगे। इन कविताओं के पाठ से आपकी संवेदना के विकास के साथ आपकी भाषिक समृद्धि भी होगी।

सहायक पुस्तकें –

1. विद्यापति : शिव प्रसाद सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद
2. जायसी : विजयदेव नारायण साही, हिन्दुस्तान एकेडमी, इलाहाबाद
3. सूफीमत: साधना और साहित्य : राम पूजन तिवारी, ज्ञानमंडल, वाराणसी
4. कबीर : हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. अकथ कहानी प्रेम की: पुरूषोत्तम अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. सूरदास :रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
7. तुलसीदास : रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
8. सूर साहित्य : हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. मीरा का काव्य : विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10. बिहारी : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
11. घनानन्द और स्वच्छन्द काव्यधारा: मनोहर लाल गौड़

SEMESTER - I
MIL Hindi (AEC-1)
Theory 02 credits

Course Objectives

हिंदी व्याकरण के कुछ महत्वपूर्ण पक्षों, हिंदी रचना के विभिन्न रूपों और प्रयोजनमूलक हिंदी के कार्यालयी पक्षों से अवगत कराना इस पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। इसके साथ ही हिंदी काव्य और गद्य के कुछ चुनिंदा और रोचक रचनाओं से आपको परिचित कराना भी इस पाठ्यक्रम के उद्देश्यों में शामिल है। यह पत्र एक हद तक रोजगरोन्मुखी पत्र भी है।

MIL Hindi (AEC-01) Theory 2 credits			
Unit	**Topics to be covered**	**No. of Lectures**	**L-T-P 2 -1- 0 Per weak**
1.	• हिंदी की ध्वनियाँ और उसके प्रकार, उच्चारण, लिपि की आवश्यकता, हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि, देवनागरी लिपि की विशेषताएँ और उसके मानकीकरण का प्रश्न • निबंध - लेखन, संक्षेपण, पल्लवन(Expansion), अवबोध(Comprehension), हिंदी मुहावरे और कहावतें, हिंदी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद • कार्यालयी हिंदी : सरकारी पत्राचार, टिप्पण, प्रारूपण (मसौदा लेखन), राजभाषा, राज्यभाषा, संपर्क भाषा, संविधान की अष्टम अनुसूची और उसके निहितार्थ	10	
2.	➢ **हिंदी की चयनित गद्य रचनाएँ** • कहानी : 'बेटोंवाली विधवा' (प्रेमचंद) • निबंध : 'भय' (रामचंद्र शुक्ल) • ललित निबंध : 'गेहूँ और गुलाब' (रामवृक्ष बेनीपुरी) • संस्मरण : 'श्री राहुल सांकृत्यायन' (रामधारी सिंह दिनकर) • व्यंग निबंध : 'सदाचार का ताबीज' (हरिशंकर परसाई) • एकांकी : 'बाबर की ममता' (देवेन्द्रनाथ शर्मा)	10	
3.	➢ **हिंदी की चयनित कविताएँ : काव्यांश**	10	

	• **कबीर** : साखी : 'करणीं बिना कथणीं कौ अंग' तथा 'कथणीं बिना करणीं कौ अंग' (कबीर ग्रंथावली : संपादक माताप्रसाद गुप्त) • **मलिक मुहम्मद जायसी** 'मंडप गमन खंड' (पद्मावत: सं. वासुदेव शरण अग्रवाल) • **तुलसी दास :** 'रामचरितमानस (बालकांड) गीता प्रेस, गोरखपुर, पुष्पवाटिका प्रसंग ; दोहा संख्या 226 से 236 तक • **भारतेंदु** : 'भारत-दुर्दशा' • **सूर्यकांत त्रिपाठी निराला** : 'राजे ने अपनी रखवाली की' ('राग विराग': संपादक रामविलास शर्मा) • **रामधारी सिंह दिनकर** : 'अघटन घटना क्या समाधान' कविता ('बापू' नामक संग्रह)		
	कुल	**30**	

COURSE OUTCOMES

इस पत्र से विद्यार्थी हिंदी भाषा की ध्वनियों, लिपि और वर्त्तनी का परिचय प्राप्त कर भाषा के शुद्ध उच्चारण, रचनात्मक लेखन, औपचारिक लेखन के साथ भाषाई सम्प्रेषण एवं संवाद में दक्ष हो सकेंगे। हिंदी-लेखन के अनेक रूपों - निबंध, संक्षेपण, पल्लवन, अवबोध आदि की जानकारी प्राप्त करेंगे। प्रयोजनमूलक हिंदी के कुछ उपयोगी रूपों से परिचित होंगे। हिंदी की कुछ रचनाओं के आस्वादन से अपनी संवेदना का विस्तार कर सकेंगे। विद्यार्थियों की रचनात्मकता का विकास होगा। यह पत्र मूलतः हिन्दी के व्यावहारिक और व्याकरणिक पक्ष को एकसाथ मजबूत करनेवाला है। पत्र रोजगार की दृष्टि से भी उपयोगी है।

सहायक पुस्तकें -

1. हिंदी शब्दानुशासन: किशोरीदास बाजपेयी
2. हिंदी व्याकरण : कामता प्रसाद गुरु
3. आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना : वासुदेवनंदन प्रसाद
4. प्रयोजनमूलक हिंदी : माधव सोनटक्के
5. प्रयोजनमूलक भाषा कार्यालयी हिंदी : कृष्ण कुमार गोस्वामी
6. प्रयोजनमूलक कामकाजी हिंदी : कैलाश चंद्र भाटिया
7. प्रारूपण, शासकीय पत्राचार और टिप्पण लेखन विधि : राजेंद्र प्रसाद श्रीवास्तव
8. कवि -समीक्षा : आनंद नारायण शर्मा

The question paper pattern

End semester examination

MJC, MIC, MDC, AEC & SEC Containing 70 Marks

The question paper pattern shall consists of three parts-

Part A-Compulsory-consisting of objective/ multiple choice type -

each carrying two marks

10x2- 20 marks

Part B -Short Answer Type - Four questions to be answered out of six questions - each carrying five marks

04x5-20 marks

Part C-Long Answer Type - Three questions to be answered out of Five questions-

each carrying ten marks

Examinations shall not be held on OMR Sheets strictly.

03x10-30 marks

The question paper pattern

Continuous Internal assessment (CIA) of MJC, MIC, MDC, AEC & SEC containing 30 marks.

- Components of CIA (For Theory Course)
  - I. One mid-semester written test(1X15)=15 marks
  - II. Seminar/ Quiz/ Presentation/Assignment= 10 marks
  - III. Attendance and conduct = 05 marks

Total	**30 marks**